Serving Education for Last 40 Years

NEERAJ®

M.H.I. - 102

आधुनिक विश्व

(Modern World)

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: *Ved Prakash Sharma*

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com
Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 280/-

Content

आधुनिक विश्व
(Modern World)

Sample Question Paper—1 (Solved) 1

Sample Question Paper—2 (Solved) 1

Sample Question Paper—3 (Solved) 1

Sample Question Paper—4 (Solved) 1

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

1. पुनर्जागरण और व्यक्ति की अवधारणा (Renaissance and the Idea of the Individual) 1

2. ज्ञानोदय (प्रबोधन काल) (The Enlightenment) 7

3. राजनीतिक क्रांति : फ्रांस (Political Revolution: France) 15

4. राज्य के सिद्धांत (Theories of the State) 21

5. नौकरशाहीकरण (Bureaucratization) 27

6. लोकतांत्रिक राजनीति (Democratic Politics) 34

7. आधुनिक राज्य और जनकल्याण (Modern State and Welfare) 41

8. राष्ट्रवाद (Nationalism) 48

9. पूँजीवादी औद्योगीकरण (Capitalist Industrialization) 54

10. समाजवादी औद्योगीकरण (Socialist Industrialization) 60

11. साम्राज्यवाद (Imperialism) 67

12. उपनिवेशवाद (Colonialism) 72

13. विऔपनिवेशीकरण (Decolonization) 78

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page
14.	प्रवासन और आवासन (Migrations and Settlements)	84
15.	राष्ट्र–राज्य व्यवस्था (Nation-State System)	90
16.	बीसवीं सदी की राजनीतिक प्रतिद्वंद्विताएं (Political Rivalries of Twentieth Century)	97
17.	राजनीतिक क्रांति : रूस (Political Revolution: Russia)	104
18.	विज्ञान और इसके निहितार्थ (Science and its Implications)	110
19.	ज्ञान क्रांति : मुद्रण और सूचना विज्ञान (Knowledge Revolution: Printing and Informatics)	115
20.	तकनीकी क्रांति : संचार और चिकित्सा (Technological Revolution: Communications and Medical)	122
21.	आधुनिक युद्ध–प्रणाली (Modern Warfare)	128
22.	सोवियत संघ का पतन (The Collapse of the Soviet Union)	135
23.	जनसांख्यिकी (Demography)	141
24.	पारिस्थितिकी (Ecology)	148
25.	उपभोक्तावाद (Consumerism)	154
26.	वैश्वीकरण (Globalization)	160

■ ■

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

Sample

QUESTION PAPER - 1

(Solved)

आधुनिक विश्व
(Modern World)

M.H.I.-102

समय : 3 घण्टे] *[कुल अंक : 100*

नोट : *निम्नलिखित में से कोई पांच प्रश्न करें। सभी प्रश्नों के अंक समान है।*

प्रश्न 1. पुनर्जागरण ने धर्मनिरपेक्ष विचारधारा के उद्भव में किस प्रकार सहायता की?

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-1, पृष्ठ-3, प्रश्न 2

प्रश्न 2. धार्मिक विश्वास पर ज्ञानोदय (प्रबोधन) के प्रभाव की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-2, पृष्ठ-9, प्रश्न 2

प्रश्न 3. राज्य की उदारवादी अवधारणा पर एक टिप्पणी लिखिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-4, पृष्ठ-23, प्रश्न 2

प्रश्न 4. आधुनिक विश्व में लोकतंत्र की उत्पत्ति पर एक टिप्पणी लिखिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-6, पृष्ठ-36, प्रश्न 1

प्रश्न 5. कल्याणकारी राज्य की अवधारणा को उदाहरण सहित समझाइए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-7, पृष्ठ-43, प्रश्न 1

प्रश्न 6. पूँजी और पूँजीवाद को परिभाषित कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-9, पृष्ठ-56, प्रश्न 1

प्रश्न 7. साम्राज्यवाद की विभिन्न सैद्धांतिक व्याख्याएं क्या हैं? संक्षेप में चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-11, पृष्ठ-68, प्रश्न 1

प्रश्न 8. रूस में समाजवादी क्रांति क्यों हुई?

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-17, पृष्ठ-105, प्रश्न 1

प्रश्न 9. सोवियत संघ के सम्मुख पेश आए आर्थिक संकट का विश्लेषण कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-22, पृष्ठ-137, प्रश्न 1

प्रश्न 10. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए–

(क) विज्ञान बनाम धर्म

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-2, पृष्ठ-8, 'विज्ञान बनाम धर्म'

(ख) पूँजीवाद के उद्भव के सिद्धांत

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-9, पृष्ठ-55, 'पूँजीवाद के उद्भव के सिद्धांत'

(ग) शीत युद्ध

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-16, पृष्ठ-97, 'शीत युद्ध'

(घ) आधुनिक विज्ञान में विकास

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-18, पृष्ठ-110, 'आधुनिक विज्ञान में विकास'

■■

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

Sample

QUESTION PAPER - 2

(Solved)

आधुनिक विश्व
(Modern World)

M.H.I.-102

समय : 3 घण्टे] *[कुल अंक : 100*

नोट : *निम्नलिखित में से कोई पांच प्रश्न करें। सभी प्रश्नों के अंक समान है।*

प्रश्न 1. "पुनर्जागरण ने मानव एक स्वतंत्र तार्किक कर्ता के रूप में एक नया दृष्टिकोण दिया।" व्याख्या कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-1, पृष्ठ-4, प्रश्न 3

प्रश्न 2. एक नई राजनीतिक संस्कृति के विकास में फ्रांसीसी क्रांति के योगदान का विश्लेषण कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-3, पृष्ठ-16, प्रश्न 1

प्रश्न 3. राज्य की धारणा को परिभाषित कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-4, पृष्ठ-22, प्रश्न 1

प्रश्न 4. आधुनिक विश्व में नौकरशाहीकरण से हमारा क्या तात्पर्य है?

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-5, पृष्ठ-28, प्रश्न 1

प्रश्न 5. इंग्लैंड में राज्य द्वारा शुरू किए गए विभिन्न कल्याणकारी उपायों का विश्लेषण कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-7, पृष्ठ-44, प्रश्न 2

प्रश्न 6. पूँजीवादी उद्यमी कौन हैं? इस परिभाषिक शब्द पर विवाद के संदर्भ में चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-9, पृष्ठ-57, प्रश्न 3

प्रश्न 7. उपनिवेशवाद के विभिन्न ऐतिहासिक चरण क्या थे? उसने भारतीय अर्थव्यवस्था को कैसे प्रभावित किया?

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-12, पृष्ठ-75, प्रश्न 3

प्रश्न 8. आधुनिक विज्ञान को आकार देने में वैज्ञानिकों के योगदान की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-18, पृष्ठ-112, प्रश्न 2

प्रश्न 9. औद्योगीकण की प्रक्रिया और पारिस्थितिक क्षति के बीच संबंध की संक्षेप में चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-24, पृष्ठ-149, प्रश्न 1

प्रश्न 10. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए–

(क) मानवतावाद

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-1, पृष्ठ-2, 'मानवतावाद'

(ख) साम्राज्यवाद के सिद्धान्त

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-11, पृष्ठ-67, 'साम्राज्यवाद के सिद्धान्त'

(ग) अक्टूबर क्रांति

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-17, पृष्ठ-104, 'अक्टूबर क्रांति'

(घ) आधुनिक चिकित्सा में विकास

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-20, पृष्ठ-123, 'आधुनिक चिकित्सा में विकास'

■■

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

आधुनिक विश्व
(Modern World)

पुनर्जागरण और व्यक्ति की अवधारणा
(Renaissance and the Idea of the Individual)

1

परिचय

14वीं से 16वीं शताब्दी तक यूरोप में हुई सांस्कृतिक हलचल को पुनर्जागरण कहा जाता है। इतालवी शब्द रिनेसां का अर्थ है फिर से जागना, किन्तु विश्व इतिहास में पुनर्जागरण का अर्थ 15वीं शताब्दी की उस बौद्धिक और सांस्कृतिक प्रगति से लिया जाता है, जिसमें प्राचीन रोमन और यूनानी साहित्य को पुनर्जीवित किया गया। सर्वप्रथम पुनर्जागरण की शुरुआत इटली से हुई, फिर वहां से उसका प्रकाश जर्मनी, इंग्लैंड, फ्रांस आदि अन्य यूरोपीय राष्ट्रों में विस्तारित हुआ। पुनर्जागरण काल में यूरोपीय इतिहास में मुख्यत: मानववाद, व्यक्तिवाद, धर्मनिरपेक्षतावाद जैसी महत्त्वपूर्ण प्रगति हुई। इसके कारण लोगों के दृष्टिकोण में व्यापक परिवर्तन हुए और वैज्ञानिक युग का सूत्रपात हुआ। कला एवं साहित्य का सामान्यीकरण हुआ।

अध्याय का विहंगावलोकन

पुनर्जागरण के विचार की शुरुआत

15वीं-16वीं शताब्दी में जिस नवीन चेतना का जन्म हुआ, वह अकस्मात शुरू नहीं हुई थी, बल्कि पिछली कई शताब्दियों से पहले भी समय-समय पर सामूहिक मानसिक उद्वेग, चिंतन और पतन के उदाहरण मिलते हैं। पुनर्जागरण से पहले भी कम-से-कम दो आंदोलनों के उदाहरण मिलते हैं–9वीं शताब्दी का कैथोलिक पुनर्जागरण तथा 12वीं शताब्दी का पुनर्जागरण। इतिहासकार के. थीथ के अनुसार, "यूरोप में पुनर्जागरण की शुरुआत अचानक नहीं हुई थी, बल्कि इसके पीछे अनेक घटनाएँ कार्य कर रही थीं और इन सबने मिलकर यूरोप में एक नई सभ्यता को एक नया मोड़ दिया, जिसे पुनर्जागरण कहा जाता है।" बर्कहार्ट ने रिनेसां शब्द का वर्णन एक नवीन संस्कृति के उदय के रूप में किया। उन्होंने रिनेसां का आधार इटली के मानवतावाद में खोजा। अपनी पुस्तक 'द सिविलाइजेशन ऑफ रिनेसां' में उन्होंने इटली के पुनर्जागरण एवं मानवतावाद का वर्णन किया है। 12वीं तथा 13वीं शताब्दी में इटली यूरोप का सबसे समृद्ध एवं शहरीकृत क्षेत्र बन गया।

इटली में विकास

12वीं-13वीं शताब्दी में उत्तरी इटली के शहरों में व्यापार की प्रगति हुई और यहां के शहरी समुदायों की स्थिति सुदृढ़ हुई। इन नगर-राज्यों की गतिविधियों में जटिलता आने के साथ ही कई नागरिक संस्थाएँ स्थायी हुईं और न्यायालय आदि अस्तित्व में आए। इन नगर-राज्यों में व्यापारी वर्ग का बोलबाला था, वे सभी महत्त्वपूर्ण कार्य करते थे। आम जनता सैनिक वर्ग में शामिल थी। 13वीं शताब्दी में उत्तरी इटली में स्वतंत्र शहरी गणतंत्र थे। इन गणतंत्रों के निवासियों के धार्मिक होने के बावजूद यहां के शहरी जीवन में पादरियों को कम महत्त्व प्राप्त था। शहरों में धनी व्यापारियों तथा उन पर आश्रित छोटे व्यापारी एवं कारीगरों का दबदबा था। लेकिन 13वीं शताब्दी के पश्चात् ये गणतंत्र सुरक्षा के दृष्टिकोण से सैनिक तानाशाहों के अधीन होते चले गए। 14वीं शताब्दी के अंत तक स्थिति यह हो गई कि लोग आपसी संघर्षों से राहत के लिए एक व्यक्ति का शासन चाहने लगे, जिसे सिन्योरिया प्रणाली कहा जाता है। ये सिन्योर गणतांत्रिक संस्थाओं के माध्यम से प्रशासन चलाते थे।

नए समूह : वकील और नोटरी

उत्तरी इटली में वाणिज्य और शहरों में वृद्धि हुई। इस परिवर्तन के कारण राजनीतिक शक्ति केन्द्र पादरियों और कुलीन सामन्तों के हाथ से निकलकर धनी शहरी व्यापारियों के हाथ में आ गया था। इन परिवर्तनों के साथ ही नए सामाजिक समूह; यथा–वकील तथा नोटरी का उदय हुआ। वाणिज्य में वृद्धि से ऐसे लोगों की मांग बढ़ गई, जो पत्र लेखन तथा समझौतों में निपुण हों, ऐसे लोगों को नोटरी कहा गया। ये लोग कई अर्थों में पुनर्जागरणयुगीन मानवतावाद के सूत्रधार थे। इन लोगों में एक प्रमुख व्यक्ति लोवातो लोवाती था, जो जज था, उसमें मानवतावाद के कई लक्षण निहित थे। अल्बर्तिनो का पेशा नोटरी का था, जो उस समय का विख्यात नोटरी था।

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

मानवतावाद

19वीं शताब्दी के बाद इतिहासकार इस नवीन संस्कृति को ही मानवतावाद कहने लगे। पुनर्जागरणयुगीन लेखन में इस शब्द की झलक कहीं भी दिखाई नहीं पड़ती थी। इसकी उपस्थिति मानव अध्ययन के रूप में दिखाई देती है, जिसका अर्थ था मानवतावादियों के पसंदीदा शैक्षिक विषय। इस शब्द का अर्थ सिसेरो ने संस्कृति के विकल्प के रूप में किया था। उसका मानना था कि केवल मनुष्य ही अपने स्वयं के विषय में यह ज्ञान अर्जित कर सकता था।

मानवतावाद को पुनर्जागरण के युग में मानवीय स्वभाव का गौरवगान समझा गया। 14वीं शताब्दी के प्रख्यात कवि पेट्राक के अनुसार, मानवतावाद प्राथमिक विशेषता के आधार पर व्यक्तिवाद का उच्च बोध तो है ही, उससे भी बढ़कर एक नए प्रकार का उभरता हुआ इतिहास बोध ही दिखाई पड़ता है। पेट्राक का मत था कि अनेक शताब्दियों के बर्बर अंधकार के बाद हम सच्ची सभ्यता का पुनरुत्थान करने में गंभीरता से जुटे हुए हैं। स्वतंत्रकर्त्ता के माध्यम से मानवतावादी आत्मछवि इस इतिहासबोध से और भी प्रखर हो गई। उन्हें विश्वास था कि रोम के साम्राज्य के पतन के बाद बर्बर लोगों के आक्रमण के कारण अंधकार युग छा जाएगा। पेट्राक इस युग के पहले पुरोधा थे, जिन्होंने नवीन संस्कृति की नींव रखी और प्राचीन रोमन सभ्यता की आत्मा को पुनर्जीवित करने की कोशिश की।

नई शिक्षा

पुनर्जागरण को एक बौद्धिक आंदोलन भी कहा जा सकता है। इसके माध्यम से शिक्षा एवं ज्ञान के क्षेत्र में एक तीव्र धारा प्रवाहित हुई। इस समय के बौद्धिक क्रियाकलाप का सर्वाधिक उल्लेखनीय विषय था, प्राचीन यूनान एवं रोम के ज्ञान भंडार को प्रकाश में लाना, जो इतिहास में 'रिवाइवल ऑफ लिर्निंग' (Revival of Living) के नाम से जाना जाता है। तत्कालीन विद्वान केवल मध्ययुगीन रचनाओं का अनुवाद करके संतुष्ट नहीं थे, बल्कि ज्ञान की व्यापक खोज में वे प्राचीन यूनानी एवं रोमन दार्शनिकों की रचनाओं का भी अध्ययन करने लगे। पेट्रार्क भी ईसाई समाज का सांस्कृतिक एवं नैतिक उत्थान चाहता था। पेट्रार्क सहित कई मानवतावादियों ने मध्ययुगीन शिक्षा की आलोचना करते हुए इसे बौद्धिक दृष्टि से अपर्याप्त बताया। पेट्रार्क ने शिक्षा के ऐसे कार्यक्रम तैयार किए, जिनके जरिये शास्त्रीय आदर्शों को प्राप्त किया जाना था।

मुद्रण

1500 ई. तक कई शास्त्रों व ग्रन्थों का इटली में प्रकाशन हुआ। मुद्रण कला के प्रकाश में आने से पूर्व तक की पुस्तकें तो मध्यकालीन धर्मशास्त्रों से सम्बन्धित होती थीं या सामंतों की शौर्य गाथाओं से जुड़ी होती थी। मुद्रण कला के आविष्कार से सस्ते मूल्यों पर विभिन्न भाषाओं में स्वस्थ पुस्तकों का प्रकाशन होने लगा। इन पुस्तकों ने नए विचारों का व्यापक प्रचार किया। पुस्तकों में ऐसा लिखा है–कहकर अब लोगों को भ्रमित नहीं किया जा सकता था।

धर्मनिरपेक्षता की शुरुआत

पुनर्जागरण के कारण मानवतावाद के केन्द्र में आ जाने से धर्मनिरपेक्षता की शुरुआत हुई। पुनर्जागरण अपने स्वरूप में धर्मनिरपेक्ष था। यह धर्मनिरपेक्षता परम्परागत धार्मिक एवं सामाजिक बंधनों से अपने को मुक्त करने तथा अपना स्वतंत्र अस्तित्व कायम करने के लिए व्यक्ति के प्रयास को सूचित करता है। इस धर्मनिरपेक्षता से मानवतावाद ने रूढ़िवाद को तो चुनौती दी, लेकिन ईसाई विश्वास या कैथोलिक कठमुल्लापन को यह चुनौती नहीं दी गई। हालांकि यह भी सही है कि इटली के समृद्ध शहरों के प्रतिभाशाली लोगों की धर्मनिरपेक्ष नैतिकता के प्रति आस्था थी। इस काल का प्रसिद्ध मानवतावादी फ्रेंस्सको बारबरो ने गरीबी की पारंपरिक धारणा को नकारते हुए धन संग्रह को आवश्यक बताया। इसी तरह ब्राचियोलिनी पोजियो ने अपनी पुस्तक 'एवरीस' में सूदखोरी की वकालत की, जबकि ईसाई धर्म में इसे जायज नहीं माना जाता था। इस समय के चिंतकों ने मानव गरिमा को महत्ता प्रदान की। इन विचारकों का मत था कि शिक्षित लोग बुद्धिजीवियों की मदद के बिना भी समझदारी प्राप्त कर सकते हैं।

15वीं और 16वीं शताब्दी में विचारकों ने एक नई मानवतावादी संस्कृति को आकार दिया, जिसने मध्ययुगीन धर्म और परम्पराओं से नियंत्रित चिंतन को मुक्त करके तर्क को बढ़ावा दिया। पुनर्जागरण ने नई किताबों के मुद्रण को प्रेरणा दी। इस काल में आत्मकथ्यात्मक पुस्तकों की रचना हुई, जिनमें धर्मनिरपेक्ष आदर्शों का सहारा लिया गया। वसारी ने अपनी पुस्तक 'लाइव्स ऑफ ग्रेट आर्टिस्ट्स' में कुछ समकालीनों के व्यक्तित्व और उनके कार्यों पर प्रकाश डाला है। वसारी तथा मैकियावेली ने अपनी रचनाओं के माध्यम से यह उजागर किया कि सभी लोग विवेक और प्रतिष्ठा हासिल कर सकते हैं।

पुनर्जागरणकालीन विचारकों का यह विश्वास था कि मनुष्य अपने विवेक और सांसारिक बोध की ताकतों से सत्य को समझ सकता है। इन विचारकों का यह मानना था कि मानव में विवेक एवं तर्कशक्ति है। बर्कहार्ट ने इसी चेतना के अंतर्गत व्यक्ति के इस विकास के लिए इतालवी नगर सुचारु भौतिक जीवन और राजनीतिक संस्कृति को उत्तरदायी माना। इस चेतना के तहत यह माना गया कि व्यक्ति अपनी निजी उपलब्धियाँ तथा प्रतिष्ठा प्राप्त कर सकता है। मैकियावेली ने भी प्रतिष्ठा को मानवीय गुण बताया।

यर्थाथवादी बनाम नैतिकतावाद

पुनर्जागरण के द्वारा यथार्थ का महत्त्व विशेष रूप से बढ़ गया, यथार्थ जीवन के तत्त्वों को विशेष महत्त्व दिया जाने लगा। मैकियावेली ने यथार्थ तत्त्वों को विशेष महत्त्व दिया। धार्मिक पुनर्जागरण के पहले समाज में जो नैतिकता की भावना थी, उसमें व्यापक परिवर्तन आया। यथार्थ को नैतिकता से जोड़ा गया। नैतिक जीवन का सम्बन्ध यथार्थ के जीवन से हो गया। प्लूटार्क ने मनुष्य के सामाजिक जीवन का ऐसा चित्रण प्रस्तुत किया और मानवीय गुणों को जाग्रत करने का प्रयत्न किया। यह विचार यथार्थवाद का मूल तत्त्व बन गया, जिसके प्रति लोगों का आकर्षण बढ़ा। मैकियावेली एक धर्मनिरपेक्ष दार्शनिक था और इसके साथ-साथ वह यथार्थवादी भी था। उसने इस बात को स्पष्ट किया कि मानवीय क्रियाकलापों के पीछे शासन करने की इच्छा प्रबल शक्ति के रूप में होती है।

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

बोध प्रश्न

प्रश्न 1. यूरोप में पुनर्जागरण के जन्म को सुगम बनाने वाले विकासों की चर्चा कीजिए।

उत्तर–पुनर्जागरण के बाद व्यापार और वाणिज्य में व्यापक रूप से परिवर्तन आया। पुनर्जागरण के पहले वैज्ञानिक खोजों पर प्रतिबंध लगे हुए थे और भौतिक जीवन के बदले आध्यात्मिक जीवन का विशेष महत्त्व था। पुनर्जागरण के बाद भौतिक जीवन का महत्त्व और भी बढ़ गया। नये ज्ञान का विकास हुआ, जिसके फलस्वरूप नये-नये उद्योग-धन्धों की शुरुआत हुई। वैज्ञानिक आविष्कारों के कारण नई तकनीकी आयी। फलतः नये रूप से व्यापार और वाणिज्य का श्रीगणेश हुआ। समाज भौतिक जीवन के सुखों से सम्पन्न होने लगा। पारलौकिक जीवन का महत्त्व घट गया। उद्योग-धंधों का विकास हुआ। इस तरह समाज में नया परिवर्तन आया। पुनर्जागरण के जो भी तथ्य सामने आए, उनकी वास्तविकता को 13वीं शताब्दी से 15वीं शताब्दी में देखा गया।

यूरोप में, विशेष रूप से इटली में, पुनर्जागरण एक बहुआयामी सांस्कृतिक परिवर्तन था, जो 14वीं शताब्दी में उभरा। पुनरुद्धार की इस अवधि की नींव सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक कारकों से आकार लेने वाले कई परस्पर जुड़े विकासों द्वारा रखी गई थी। उनमें से कुछ इस प्रकार हैं–

मानवतावाद और पुरातनता की पुनर्खोज–प्रमुख उत्प्रेरकों में से एक शास्त्रीय ग्रीक और रोमन साहित्य और दर्शन में रुचि का पुनरुद्धार था, जिसे मानवतावाद के रूप में जाना जाता है। प्राचीन पांडुलिपियों की पुनर्प्राप्ति ने, विशेष रूप से 12वीं शताब्दी के पुनर्जागरण के दौरान, एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। पेट्रार्क और बोकाशियो जैसे विद्वानों के कार्यों ने पुरातनता के ज्ञान के लिए नए सिरे से सराहना को बढ़ावा दिया।

इटली में शहरीकरण और वाणिज्य–उत्तरी इटली के फ्लोरेंस और जेनोआ जैसे समृद्ध शहरी केंद्रों ने पुनर्जागरण को बढ़ावा देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन शहर-राज्यों ने अपने विस्तारित वाणिज्य और बाजार अर्थव्यवस्थाओं के साथ, बौद्धिक और कलात्मक प्रयासों के लिए अनुकूल वातावरण बनाया। शहरीकरण के कारण एक व्यापारी वर्ग का उदय हुआ, जिसने कला को संरक्षण दिया और मानवतावादी विद्वानों का समर्थन किया।

सामंतवाद का पतन–सामंतवाद के पतन और इटली में केंद्रीकृत राजशाही के कमजोर होने से शहर-राज्यों में अधिक स्वायत्तता की अनुमति मिली। उत्तरी यूरोप के विपरीत, जहां सामंतवाद कायम था, इटली ने अधिक विकेन्द्रीकृत राजनीतिक संरचना का अनुभव किया। सत्ता की गतिशीलता में इस बदलाव ने स्वतंत्र गणराज्यों और कुलीनतंत्रों के उद्भव की अनुमति दी।

कला का संरक्षण–धनी व्यापारी अभिजात वर्ग, कलाकारों, लेखकों और विद्वानों का समर्थन करते हुए कला के संरक्षक बन गए। फ्लोरेंस में मेडिसी जैसे परिवारों ने लियोनार्डो दा विंची, माइकल एंजेलो और राफेल जैसे प्रसिद्ध कलाकारों के कार्यों को प्रायोजित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस संरक्षण प्रणाली ने कलाकारों को अपनी कला पर ध्यान केंद्रित करने के लिए वित्तीय साधन प्रदान किए।

नागरिक संस्थाएँ और शासन–इटली के शहर-राज्यों ने नागरिक संस्थाओं और शासन संरचनाओं का विकास किया, जिससे नागरिकता की भावना में योगदान हुआ। राजनीतिक उथल-पुथल और गुटीय प्रतिद्वंद्विता के बावजूद, इतालवी शहर-राज्यों ने स्वशासन की क्षमता का प्रदर्शन किया। इस नागरिक चेतना ने व्यक्तिगत अधिकारों और जिम्मेदारियों की एक नई समझ के लिए आधार तैयार किया।

धर्मनिरपेक्षता और व्यक्तिवाद–पुनर्जागरण में धर्मनिरपेक्षता और व्यक्तिवाद की ओर बदलाव देखा गया। शास्त्रीय मानवतावाद के पुनरुद्धार ने धार्मिक विचारों के प्रभुत्व को चुनौती देते हुए, सांसारिक क्षेत्र में मानव अनुभव के मूल्य पर जोर दिया। बर्कहार्ट जैसे विद्वानों ने एक विशिष्ट 'पुनर्जागरण पुरुष' की पहचान की, जिसने व्यक्तिगत उपलब्धि और व्यक्तिगत विकास पर जोर देते हुए सांसारिक गतिविधियों को अपनाया।

जबकि 19वीं शताब्दी में जैकब बर्कहार्ट के पुनर्जागरण अवधारणाओं के प्रतिपादन को आलोचना का सामना करना पड़ा है, लेकिन उन्होंने जिन मूल तत्वों की पहचान की, वे इस परिवर्तनकारी अवधि को समझने के लिए महत्त्वपूर्ण बने हुए हैं। मानवतावाद, शहरीकरण, संरक्षण और शासन में परिवर्तन के अभिसरण ने सामूहिक रूप से एक ऐसा वातावरण तैयार किया, जिसने पुनर्जागरण को बढ़ावा दिया। इस सांस्कृतिक पुनर्जन्म ने कला, साहित्य, दर्शन और समाज में गहरे बदलावों के लिए मंच तैयार करते हुए, मध्यकालीन विश्वदृष्टि से एक प्रस्थान को चिह्नित किया।

प्रश्न 2. पुनर्जागरण ने धर्मनिरपेक्ष विचारधारा के उद्भव में किस प्रकार सहायता की?

उत्तर–पुनर्जागरण ने धर्मनिरपेक्ष विचारधारा के उद्भव में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई, धार्मिक सत्ता के प्रभुत्व को चुनौती दी और अधिक मानव-केंद्रित विश्वदृष्टि का मार्ग प्रशस्त किया। 14वीं से 17वीं शताब्दी तक फैले इस परिवर्तनकारी काल में एक सांस्कृतिक पुनरुद्धार देखा गया जिसने मध्यकालीन, धार्मिक-केंद्रित दृष्टिकोण से अधिक धर्मनिरपेक्ष और मानवतावादी दृष्टिकोण में क्रमिक बदलाव में योगदान दिया।

मानवतावाद और शास्त्रीय ज्ञान की पुनर्खोज–मानवतावाद, पुनर्जागरण का एक केंद्रीय बौद्धिक आंदोलन, मानव अनुभव, ज्ञान और व्यक्तिगत क्षमता के मूल्य पर जोर देता है। प्राचीन पांडुलिपियों के अनुवाद से सुगम शास्त्रीय ग्रीक और रोमन ग्रंथों की पुनः खोज ने विद्वानों को धार्मिक सिद्धांतों के दायरे से बाहर ज्ञान के भंडार से अवगत कराया। पेट्रार्क और इरास्मस जैसे मानवतावादियों ने मानवीय स्थिति की अधिक व्यापक समझ को प्रोत्साहित करते हुए शास्त्रीय साहित्य, दर्शन और इतिहास के अध्ययन को बढ़ावा दिया।

व्यक्तिवाद और मानव उपलब्धि पर ध्यान–पुनर्जागरण ने व्यक्ति को एक विशिष्ट और स्वायत्त इकाई के रूप में मनाया। 'पुनर्जागरण पुरुष' का विचार उभरा-कला, विज्ञान और मानविकी सहित विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्टता प्राप्त करने में सक्षम एक पूर्ण व्यक्ति। व्यक्तिवाद और व्यक्तिगत उपलब्धि पर इस फोकस ने सांस्कृतिक जोर को दैवीय विधान से मानवीय एजेंसी पर स्थानांतरित

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

कर दिया, जिससे मानवीय क्षमताओं और उपलब्धियों के लिए धर्मनिरपेक्ष सराहना को बढ़ावा मिला।

कलात्मक अभिव्यक्ति और धर्मनिरपेक्ष विषय–पुनर्जागरण के दौरान कला धार्मिक विषयों से धर्मनिरपेक्ष विषयों की ओर प्रस्थान को दर्शाती है। लियोनार्डो दा विंची, माइकल एंजेलो और राफेल जैसे प्रसिद्ध कलाकारों ने अपने कार्यों में मानव शरीर रचना विज्ञान, प्रकृति और रोजमर्रा की जिंदगी को चित्रित किया। कला में धर्मनिरपेक्ष विषयों के चित्रण ने व्यापक सांस्कृतिक बदलाव में योगदान दिया, विशेष रूप से धार्मिक आख्यानों पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय भौतिक दुनिया की सुंदरता और महत्त्व पर जोर दिया।

धर्मनिरपेक्ष संरक्षण और नागरिक मानवतावाद–विशेष रूप से फ्लोरेंस में मेडिसी जैसे धनी व्यापारी परिवारों द्वारा धर्मनिरपेक्ष संरक्षण के उद्‌भव ने धार्मिक संस्थानों पर कम निर्भरता के साथ कला, साहित्य और शिक्षा के समर्थन की अनुमति दी। नागरिक मानवतावाद, पुनर्जागरण के भीतर एक बौद्धिक आंदोलन, ने नागरिक जीवन में भाग लेने और शहर-राज्य की भलाई में योगदान देने के महत्त्व पर जोर दिया। यह नागरिक जुड़ाव। हालांकि आवश्यक रूप से धार्मिक-विरोधी नहीं था, केवल धार्मिक गतिविधियों से ध्यान हटाकर सामाजिक विकास के अधिक व्यापक दृष्टिकोण की ओर ले गया।

वैज्ञानिक जाँच और अनुभवजन्य अवलोकन–पुनर्जागरण में वैज्ञानिक जाँच और अनुभवजन्य अवलोकन में नए सिरे से रुचि देखी गई। कॉपरनिकस, गैलीलियो और कैप्लर जैसी हस्तियों ने अनुभवजन्य साक्ष्य और गणितीय सटीकता के साथ ब्रह्मांड के पारंपरिक धार्मिक विचारों को चुनौती दी। वैज्ञानिक अन्वेषण की ओर इस बदलाव ने धार्मिक हठधर्मिता से स्वतंत्र, प्राकृतिक दुनिया की एक धर्मनिरपेक्ष समझ के उदय में योगदान दिया।

धार्मिक प्राधिकार का संदेह और आलोचना–जैसे-जैसे मानवतावाद विकसित हुआ, निर्विवाद धार्मिक प्राधिकार के संबंध में संदेह की भावना उभरी। बुद्धिजीवियों ने पारंपरिक धार्मिक सिद्धांतों और प्रथाओं पर सवाल उठाना शुरू कर दिया। पिको डेला मिरांडोला जैसे मानवतावादी विद्वानों के कार्यों ने अधिक उदार और खुले विचारों वाला दृष्टिकोण व्यक्त किया, कैथोलिक चर्च की रूढ़िवादिता को चुनौती दी और धर्मनिरपेक्ष विचार के लिए अनुकूल माहौल को बढ़ावा दिया।

शैक्षिक सुधार और मानवतावादी पाठ्यक्रम–पुनर्जागरण के दौरान शैक्षिक सुधारों ने मानवतावादी आदर्शों से प्रेरित होकर एक पाठ्यक्रम पेश किया, जिसमें शास्त्रीय साहित्य, दर्शन और भाषाएँ शामिल थीं। धर्मनिरपेक्ष विषयों सहित व्यापक आधार वाली शिक्षा पर इस जोर ने शिक्षित अभिजात वर्ग के बीच अधिक सांसारिक और मानव-केंद्रित परिप्रेक्ष्य के विकास में योगदान दिया।

प्रश्न 3. "पुनर्जागरण ने मानव एक स्वतंत्र तार्किक कर्ता के रूप में एक नया दृष्टिकोण दिया।" व्याख्या कीजिए।

उत्तर–पुनर्जागरण के सम्बन्ध में यह भावना प्रकट हुई कि ईश्वर ने मनुष्य को स्वतंत्र रूप से जन्म दिया है। मनुष्य के अन्दर बुद्धि और विवेक की क्षमता है। बुद्धि और विवेक के आधार पर मनुष्य सही और गलत का निर्णय कर सकता है। इसीलिए मनुष्य अनावश्यक दबाव में निर्णय कर सकता है। मनुष्य को सुखी जीवन जीने का अधिकार है। उसे दुखी जीवन जीने के लिए बाध्य नहीं किया जा सकता। मनुष्य के मस्तिष्क में उसका पथ-प्रदर्शक व्याप्त है। 14वीं से 17वीं शताब्दी तक फैले पुनर्जागरण ने यूरोप में एक सांस्कृतिक और बौद्धिक पुनर्जन्म को चिह्नित किया, जिसमें शास्त्रीय शिक्षा, मानवतावाद में नए सिरे से रुचि और मध्यकालीन परंपराओं से प्रस्थान शामिल था। एक स्वतंत्र तर्कसंगत एजेंट के रूप में मनुष्य की धारणा इस परिवर्तनकारी अवधि की आधारशिला बन गई।

मानवतावाद और व्यक्तिवाद का उत्सव–मानवतावाद, पुनर्जागरण का एक प्रमुख बौद्धिक आंदोलन, व्यक्ति के मूल्य और क्षमता पर जोर देता है। इस अवधि के दौरान विद्वानों और विचारकों ने शास्त्रीय ग्रीक और रोमन ग्रंथों से प्रेरणा ली, जो मानव उपलब्धियों, बुद्धि और रचनात्मकता का जश्न मनाते थे। शास्त्रीय साहित्य और दर्शन में नवीनीकृत रुचि ने अधिक व्यक्तिवादी दृष्टिकोण के उद्‌भव में योगदान दिया, इस विचार को बढ़ावा दिया कि प्रत्येक व्यक्ति में अंतर्निहित मूल्य और एजेंसी होती है।

मध्यकालीन प्रतिबंधों की अस्वीकृति–पुनर्जागरण में मध्यकालीन संस्थानों, विशेष रूप से कैथोलिक चर्च के प्रतिबंधात्मक विश्व दृष्टिकोण द्वारा लगाए गए प्रतिबंधों की अस्वीकृति देखी गई। मनुष्य को स्वाभाविक रूप से पापी और मोक्ष की आवश्यकता के रूप में मीडिया की धारणा ने मानवता के बारे में अधिक आशावादी दृष्टिकोण को जन्म दिया। मानव प्रगति की संभावना में विश्वास और मूल पाप की धारणा की अस्वीकृति ने इस विचार में योगदान दिया कि व्यक्ति तर्कसंगत विकल्प बनाने और अपने भाग्य को आकार देने में सक्षम थे।

तर्क और आलोचनात्मक सोच पर जोर–पुनर्जागरण विचारकों ने तर्क और आलोचनात्मक सोच पर महत्त्वपूर्ण जोर दिया। शास्त्रीय दर्शन में रुचि के पुनरुद्धार, विशेष रूप से प्लेटो और अरस्तू जैसे प्राचीन यूनानी दार्शनिकों के कार्यों ने इस विचार को बढ़ावा दिया कि व्यक्ति तर्कसंगत प्रवचन में संलग्न हो सकते हैं, जानकारी का विश्लेषण कर सकते हैं और तर्क के आधार पर निर्णय ले सकते हैं। तर्क पर इस जोर ने ज्ञानोदय के लिए आधार तैयार किया, जिसने आगे तर्कवाद और व्यक्तिगत स्वायत्तता की वकालत की।

मानव क्षमता की कलात्मक अभिव्यक्ति–लियोनार्डो दा विंची और माइकल एंजेलो जैसे पुनर्जागरण के कलाकारों ने मानव रूप को अभूतपूर्व यथार्थवाद और जटिलता के साथ चित्रित किया। मानव शरीर की कलात्मक अभिव्यक्ति, विभिन्न गतिविधियों में लगे व्यक्तियों के चित्रण के साथ, मानव रूप और बुद्धि की सुंदरता और क्षमता में विश्वास को दर्शाती है। कला इस विचार को संप्रेषित करने का एक शक्तिशाली माध्यम बन गई कि व्यक्ति निष्क्रिय विषय नहीं बल्कि अपने जीवन में सक्रिय एजेंट हैं।

धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण का विकास–पुनर्जागरण में मुख्य रूप से धार्मिक विश्वदृष्टिकोण से अधिक धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण की ओर क्रमिक बदलाव देखा गया। जबकि धर्म ने भूमिका निभाना जारी रखा, मानवीय अनुभवों और रुचियों की एक विस्तृत श्रृंखला

www.neerajbooks.com